विस्थापन का दर्द : वास्तविक या कृत्रिम ।

मुज्जफ्फर नगर दंगों के बाद बडी संख्या मे मुसलमानों का पलायन हुआ और वे निकटवर्ती शॉत क्षेत्रों मे तात्कालिक रूप से रहने लगे। ऐसे लोगों की हालत दयनीय थी। उनकी स्थिति को देखकर मन करूणा से भर जाता था, यहॉ तक कि तटस्थ हिन्दुओं का भी। ऐसे पलायन कर चुके कुछ लोगों मे से, कुछ लोग अपने–अपने घरों मे वापस चले गये। यद्यपि उन्हें वापस जाने मे भी डर लग रहा था, लेकिन वे कुछ खतरा उठाकर भी अपने–अपने घरों को लौट गये। उत्तरप्रदेश की अखिलेश सरकार ने भी उन्हें वापस जाने मे मदद की यहॉ तक कि वापस जाने वाले परिवारों को पॉच–पॉच लाख तक की आर्थिक सहायता भी दी गई। फिर भी कुछ लोग कैम्पों मे रूके रह गये। यहॉ तक कि कुछ लोग तो पॉच लाख रूपया सहायता लेने के बाद भी वापस नही गये और कुछ लोग आज तक वापस जाने को तैयार नही है।

प्रारंम्भिक काल मे कैंम्पों मे पेशेवर सांम्प्रदायिक राष्ट्र विरोधी तत्वों का समावेश नही था। धीरे–धीरे इन कैंम्पों मे ऐसे तत्वों का समावेश होता गया तथा बचे हुए लोगों मे से अनेक ने इस घटना को एक व्यवसाय मानकर राज्य सरकार का अधिकतम शोषण करने का प्रयास शुरू किया। ऐसे तत्व एक ओर तो भय का नाटक करते थे, दूसरी ओर अधिक से अधिक करूणा के दृश्य दिखाने का भी नाटक करते थे। तीसरी ओर इनके एजेंट मीडिया के माध्यम से उत्तरप्रदेश सरकार या भारत सरकार पर भी ऐसा दबाव बनाते थे जैसे कि कैंम्प मे बचे लोगों को बहुत ही अमानवीय स्थिति मे रहना पड रहा है। अखिलेश सरकार ने बहुत हिम्मत करके ऐसे कैंम्पों को बन्द करने का प्रयास किया। इसका लाभ अन्य राजनैतिक दलों ने भी बहुत उठाया और अब भी कुछ लोग अपने कैंम्पों मे बचे हुए हैं। स्पष्ट दिखता है कि जो लोग वापस हुए है, उनसे किसी के साथ कोई दुर्घटना नही हुई है। फिर भी या तो ये लोग जाना नही चाहते हैं या पेशेवर राजनेता अपने राजनैतिक लाभ के लिए उन्हें रोककर रखना चाहतें हैं।

विस्थापन अथवा पलायन की ऐसी ही घटना कश्मीर मे भी हो चुकी है। वहॉ से भी बडी संख्या मे कश्मीरी पंडित पलायित होकर या तो जम्मू चले गये अथवा भारत के अन्य शहरों मे बस गये। कश्मीर मे भी लगभग वैसा ही हुआ, जब ऐसे विस्थापित कश्मीरी पंडितों मे से कुछ संख्या मे पंडित अपने घरों को चले गये और मुज्जफ्फर नगर सरीखे ही कुछ लोग कैंम्पों मे रह गये। सरकार से सुविधाएं भी लेते रहे और अन्य सुविधाओं की मॉग भी करते रहे। आज तक काफी संख्या मे कश्मीरी पंडित कश्मीर छोडकर अन्य जगहों पर रह रहें हैं और जिस तरह मुज्जफ्फर नगर मे मुस्लिम सांम्प्रदायिक तत्व अर्थात बसपा–कॉग्रेंस तथा कुछ अन्य लोग जिनमें मीडिया कर्मी भी शामिल हैं, वहॉ की सरकार को बदनाम करने के लिए नमूने के तौर पर ऐसे लोगों को प्रतीक स्वरूप रखे हुए हैं। उसी तरह कश्मीर मे भी कश्मीरी पंडितों को वापस जाने से रूकने को सांम्प्रदायिक हिन्दू विशेषकर संघ–भाजपा के लोग हथियार के तौर पर उपयोग कर रहें हैं।

फिर भी यदि गहराई से सोचा जाए तो ये दोनो समस्याएँ लगभग समान होने के बाद भी कुछ भिन्न हैं। मुज्जफ्फर नगर मे जो पलायन हुआ उसका कारण सांम्प्रदायिक हिन्दुओं का मुसलमानों पर कोई अत्याचार नही था, बल्कि सांम्प्रदायिक मुसलमानों का बढा हुआ मनोबल था। क्योंकि वहॉ शक्ति प्रदर्शन की पहल सांम्प्रदायिक मुसलमानों ने ही की थी। यद्यपि इसका परिणाम वहॉ के शॉति प्रिय मुसलमानों को झेलना पडा। दूसरी ओर कश्मीरी पंडितों का पलायन भी सांम्प्रदायिक मुसलमानों द्वारा अपने शक्ति प्रदर्शन के रूप मे तथा कश्मीर को हिन्दुओं से खाली कराने के उद्देश्य से पैदा हुआ। दोनों के परिणाम भले ही एक समान हुए जिसमें शॉति प्रिय हिन्दू और शॉति प्रिय मुसलमानों को भोगना पडा, किन्तु दोनो घटनाओं के कारण सांम्प्रदायिक मुसलमान ही थे। यदयपि दोनो घटनाओं से लाभ सांम्प्रदायिक हिन्दुओं को ही हुआ। कश्मीरी पंडित चाहे जिस दशा मे रह रहें हों, जितने परेशान हों, किन्तु उनका लाभ सांम्प्रदायिक हिन्दू संगठनों को मिल रहा है। मुज्जफ्फर नगर मे हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच राजनैतिक ध्रुवीकरण हुआ और उसका लाभ अलग–अलग राजनैतिक दलों के लोग उठा–उठा कर प्रसन्न हो रहें हैं।

यदि गंभीरता से सोचा जाए तो स्वतंत्रता के बाद भारत मे लगातार सांम्प्रदायिकता का विस्तार हुआ है। इसकी शुरूवात स्वतंत्रता के शीघ्र बाद नेहरू और पटेल के बीच विचार भिन्नता के रूप मे देखना चाहिए। गॉधी हत्या एक शुद्ध सांम्प्रदायिक

घटना थी, जिसके पीछे हिन्दू–राष्ट्र की भावना काम कर रही थी। भले ही इस हत्या से संघ का कोई सीधा संबंध नही था, किन्तु इस भावना से संघ का निरंतर संबंध था और वह संबंध आज तक बना हुआ है। सरदार पटेल एक ईमानदार राष्ट्रवादी नेता थे, जो हिन्दुओं की ओर ऑशिक रूप से झुके हुए थे। दूसरी ओर पंडित नेहरू एक समाजवादी विचारों के पोषक थे जो ऑशिक रूप से मुसलमानों की ओर झुके हुए थे। भारत की राजनैतिक व्यवस्था मे इन दोनो के अतिरिक्त एक तीसरे व्यक्ति भीमराव अंम्बेडकर थे, जो भले ही जातीयता के आधार पर हिन्दुओं से घृणा करते हों, किन्तु सांम्प्रदायिक आधार पर वे हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच मे समान भाव रखते थे। सरदार पटेल और पंडित नेहरू के अलग–अलग अनेक उल्लेखनीय कार्य अब तक याद कियें जाते हैं, किन्तु सांम्प्रदायिकता के आधार पर दोनो ही एक समस्या के रूप मे थे और आज तक हैं। गॉधी हत्या के बाद सच्चाई यह है कि हिन्दू सांम्प्रदायिकता को पूरी ताकत से कुचल देना चाहिए था। पटेल जी ने प्रारंभ मे तो लोक–लाज से ऐसा कदम उठाया भी किन्तु शीघ्र ही संघ परिवार द्वारा स्वयं को सांस्कृतिक गतिविधियों तक सीमित रखने का झूठा आश्वासन पाकर विश्वास कर लिया और उन्हें सब प्रकार की छूट दे दी। संघ परिवार कितना सांस्कृतिक सीमाओं मे हैं यह बात किसी से छिपी नही है। दूसरी ओर पंडित नेहरू ने सांम्प्रदायिक हिन्दुओं को कुचलने की अपेक्षा सांम्प्रदायिक–मुसलमानों को प्रोत्साहन दिया जिससे कि बैंलेंस बना रहे। सब जानतें हैं कि स्वतंत्रता के पहले जब भारत का विभाजन निश्चित नही हुआ था, उस समय विभाजन को टालने के लिए मुसलमानों को अल्पसंख्यक संरक्षण देने की बात कही गई थी। जब इस संरक्षण से संतुष्ट न होकर मुसलमानों ने पाकिस्तान ले लिया, भारत का विभाजन हो गया, इसके बाद भी अल्प–संख्यक शब्द संविधान से नही हटाया गया। यहॉ तक कि चापेकर बंधुओं ने संविधान बनाते समय यह प्रश्न उठाया भी तो पंडित नेहरू ने कडे होकर उनको रोक दिया। यदि उस समय हिन्दू–राष्ट्र और अल्प–संख्यक संरक्षण जैसे मुद्दों को हटाकर सरदार पटेल और पंडित नेहरू समान नागरिक संहिता के पक्ष मे हो गये होते तो भारत से सांम्प्रदायिकता का यह कोढ मिट गया होता। मुझे विश्वास है कि समान नागरिक संहिता के पक्ष मे भीमराव अंम्बेडकर भी मान जाते। गॉधी हत्या के बाद हिन्दू सांम्प्रदायिकता के प्रति नरम रूख रखने वाले सरदार पटेल और उसकी भरपाई के लिए मुस्लिम सांम्प्रदायिकता को संरक्षण देने वाले पंडित नेहरू, कश्मीर या कश्मीरी पंडितों और मुज्जफ्फर नगर दंगों में पलायन करने पाले शॉति प्रिय मुसलमानों के कष्टों के लिए दोषी हैं।

पंडित नेहरू समाजवाद के पोषक थे, किन्तु आश्चर्य है कि वे कभी समाजवाद का अर्थ समझे ही नही। समाजवाद का अर्थ होता है समाज सशक्तिकरण और जिसका धरातल पर अर्थ होता है परिवार, गॉव, जिले को अधिकतम संवैधानिक अधिकार देना। पंडित नेहरू ने समाजवाद का अर्थ किया राष्टीयकरण अर्थात राज्य सशक्तिकरण और जिसका धरातल पर अर्थ हुआ परिवार गॉव, जिले के सारे अधिकार छीनकर राज्य के पास केन्द्रित करना। दूसरी ओर सरदार पटेल ने भी राष्टवाद का अर्थ नही समझा। राष्टवाद का अर्थ होता है राष्ट की प्रभुसत्ता को समाज के साथ जोडना और समाज सशक्तिकरण। सरदार पटेल ने भी विकेन्द्रित सत्ता की जगह केन्द्रित सत्ता का समर्थन किया। आश्चर्य है कि दोनो के प्रशंसक अलग–अलग गुटों मे बॅटकर दोनो के अलग–अलग गुणगान करने मे लगे रहतें हैं। जबकि दोनो की ही वास्तविकता कुछ अलग है।

अब भी सब कुछ विध्वंस नही हुआ है, अब भी सांम्प्रदायिकता का समाधान संभव है। यद्यदि वह समस्या अब उतनी साधारण नही है जैसी गॉधी हत्या के तत्काल बाद थी किन्तु समस्या चाहे जितनी विकराल हो गई हो उसका समाधान तो करना ही होगा। अब शीघ्रातिशीघ्र दो काम करने चाहिए– राष्ट्र सर्वोच्च की जगह समाज सर्वोच्च का विचार बढाने की आवश्यकता है। दूसरी आवश्यकता है कि समान नागरिक संहिता को संविधान का भाग बनाकर उसे कडाई से लागू कर दिया जाए। राष्ट्र सर्वोच्च की जगह समाज सर्वोच्च की बात का सांम्प्रदायिक हिन्दू पुरजोर विरोध करेगें। दूसरी ओर समान नागरिक संहिता का सांम्प्रदायिक मुसलमान भी पुरजोर विरोध करेंगें और यदि दोनो बातों को एक साथ लागू कर दिया जाए तो सांम्प्रदायिक तत्व अलग–थलग पड जाएंगें। मुझे तो ऐसा भी लगता है कि ऐसा कदम उठाते ही सांम्प्रदायिक हिन्दू और सांम्प्रदायिक मुसलमान एक–जुट हो जाएंगें, एक ही थाली मे बैठकर खाना–खाने लगेगें, एक साथ होकर इन विचारों का विरोध करने लगेगें और संभव है कि सांम्प्रदायिकता का कलंक भारत से मिट जाए।

रमेश चौबे : सचिव लोकस्वराज मंच।

प्रश्नः– वर्ण व्यवस्था हिन्दू धर्म मे प्राचीन काल से चले आ रहे सामाजिक गठन का अंग है, जिसमे विभिन्न समुदायों के लोगों का काम निर्धारित होता था। इनकी संतानों के कार्य भी इन्हीं पर निर्भर करते थे, तथा विभिन्न प्रकार के कार्यों के अनुसार बने ऐसे समुदायों को जाति या वर्ण कहा जाता था। प्राचीन भारतीय समाज ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र वर्णों मे विभाजित था। ब्राम्हणों का कार्य शास्त्र अध्ययन वेदपाठ तथा यज्ञ कराना होता था। जबकि क्षत्रिय युद्ध तथा राज्य के कार्यों के लिए उत्तरदायी होते थे। वैश्यों का काम व्यापार तथा शूद्रों का काम सहायता प्रदान करना होता था। प्राचीन काल मे यह सब संतुलित था तथा सामाजिक संगठन की दक्षता बढाने के काम आता था। परंतु कॉलान्तर मे उॅच–नीच के भेदभाव तथा आर्थिक स्थिति बदलने के कारण विभिन्न वर्णों के बीच दूरियॉ बढी। आज आरक्षण के कारण विभिन्न वर्णों के बीच अलग सा रिश्ता बनता जा रहा है। कहा जाता है कि हिटलर भारतीय वर्ण व्यवस्था से प्रभावित था। भारतीय उपमहाद्वीप के कई अन्य धर्म तथा सम्प्रदाय भी इसका पालन ऑशिक या पूर्ण रूप से करते हैं। इनमे सिक्ख, इस्लाम तथा इसाई धर्म का नाम उल्लेखनीय है।

शरीर के सभी अंगो का अपना–अपना महत्व व कार्य है। धार्मिक दृष्टि से कहा जाता है कि ब्रम्हा के मुख से ब्राम्हण, भुजाओं से क्षत्रिय, उदर से वैश्य और पैर से शूद्र, चारों एक दूसरे के पूरक एक दूसरे पर निर्भरता के द्योतक हैं। चारों गुण स्वभाव से ही हम संम्पूर्णता को प्राप्त करतें हैं। गुण प्रधानता स्वभाव के कारण इनका वर्णों मे विभाजन हुआ। इतिहासकारों के अनुसार भारत वर्ष मे प्राचीन हिन्दू वर्ण व्यवस्था– मे लोगों को उनके द्वारा किये जाने वाले कार्य के अनुसार अलग–अलग वर्गों मे रखा गया था। वैदिक काल की प्राचीन व्यवस्था मे जाति वंशानुगत नही होती थी। लेकिन गुप्तकाल के आते–आते अंनुवाशिंक आधार पर लोगों के वर्ण तय होने लगे। परस्पर श्रेष्ठता भाव के चलते नई–नई जातियों की रचना होने लगी। यहॉ तक कि श्रेष्ठता की आपसी प्रतिद्वंदिता ने चारों वर्णों मे भी कई उपवर्ग एवं जातियों की संख्या बढाने का काम किया। आजादी के बाद आरक्षण व्यवस्था की नई शुरूवात ने इसे और गहरा करने का कार्य किया है। राजनैतिक दलों ने तो सारी सीमाओं को पार करते हुए समाज को गहरा आघात पहुंचाने लायक स्थिति मे पहुंचाया है। स्पष्ट है कि वास्तव मे वर्ण व्यवस्था किसी के जन्म के आधार पर नही बल्कि उसके कर्मों के आधार पर तय की गई थी। परन्तु वर्तमान मे इसकी वंशानुगत स्थिति को स्वीकार करने या कायम रहने के कारण समाज मे असंतोष और विभेद का कारक बन गई है। जाति प्रथा हमारे समाज को सही तरह से चलाने के लिए शुरू की गई थी, न कि उसे टुकडों मे बॉटकर आपस मे घृणा बॉटने के लिए। वर्णप्रथा की शुरूवात समाज मे कार्य को विभाजित कर उसे सही रूप से कार्यान्वित करने के लिए की गई थी, न कि उॅच–नीच जैसी प्रथा को प्रेरित कर समाज को ऐसा बना देना जहॉ कर्म या ज्ञान को कम और जाति को ज्यादा महत्ता दी जाती है।

हर एक आदमी की चारों जातियॉ होती है– ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र। ये चारों खूबियॉ होती है और समझने की आसानी के लिए हम एक आदमी को उसके खास पेशे से जोडकर देख सकतें हैं। हॉलाकि जाति–प्रथा आज के दौर और सामाजिक ढॉचें मे अपनी प्रासंगिकता पहले से ज्यादा खो चुकी है। यजुर्वेद–32.16– मे भगवान से आदमी ने प्रार्थना की है कि ''हे ईश्वर''आप मेरी ब्राम्हण और क्षत्रिय योग्यताएं बहुत ही अच्छी कर दो। इससे यह शाबित होता है कि ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र आदि शब्द असल मे गुणों को प्रगट करतें हैं न कि किसी आदमी की पहचान को। अतः किसी व्यक्ति को शूद्र बताकर उससे घटिया व्यवहार करना वेद विरूद्ध है। अब तक किसी के पास ऐसा कोई तरीका नही कि जिससे यह फैसला हो सके कि क्या पिछले हजारों सालों से तथाकथित उॅची जाति के लोग उॅचें ही रहें हैं, और नीची जाति के लोग नीची जाति के ही रहें हैं।

जाति प्रथा ने हमे सिर्फ बर्बाद ही किया है। जबसे भारत ने इस जात–पात को गंभीरता से लेना शुरू किया है तब से हमारा देश दुनिया को राह दिखाने वाले दर्जे से निकलकर, दुनिया का सबसे बडा कर्जदार, भिखारी और ज्ञान आयातक देश बनकर रह गया है। पश्चिमी दुनिया के देश इसलिए इतनी तरक्की कर पाये क्योंकि उन्होनें अपनी बहुत सी कमियों के बावजूद सभी आदमियों को सिर्फ उनकी पैदाइश को पैमाना न बनाकर इंसान की इज्जत के मामलें मे बराबरी का हक/दर्जा दिया।

जातिवाद से हिन्दूधर्म मे गिरावट आयी है। हिन्दूधर्म के लिए इससे बडे दुर्भाग्य की बात और क्या होगी? क्या हमारे पास ऐसी कोई चीज है जिससे कि सदियों पहले अपने छोटे–छोटे दूध पीते बच्चों की जान बचाने के लिए, बहू बेटियों की इज्जत बचाने के लिए, डर और मजबूरी से अलग हुए हमारे अपने ही भाइयों को इज्जत के साथ हिन्दुधर्म मे आने के लिए मना सकें? क्या हमें उन्हें भला बुरा कहने का कोई हक है? दुख है कि लोग वर्ण व्यवस्था और जातिप्रथा के बीच अंन्तर नही समझते। यही अज्ञानता समाज मे आपसी भेदभाव और उॅच–नीच का विचार भाव पैदा करने का कारण बना हुआ है। इसी विचार के कारण लोग एकजुट नही हो पा रहें हैं। वास्तव मे वर्ण व्यवस्था लोगों के व्यवसाय यानि उनके कर्मो के आधार पर निर्धारित की गई थी, किसी परिवार मे जन्म लेने के आधार पर नही। गीता मे स्पष्ट कहा गया है कि ''चातुर्वण्यं मया सृष्टं, गुण कर्म विभागशः। फिर भी लोग खुद को सवर्ण बताकर शूद्रों को हेय समझतें हैं। महर्षि बाल्मिकि न तो ब्राम्हण थे और न ही क्षत्रिय या वैश्य। सभी जानतें है कि वह शूद्र थे। इस सत्य को जानते हुए भी श्री राम ने सीता जी को उनके आश्रम भेज दिया था। इसी तरह पवित्र एवं महान कृति गीता–महाभारत की रचना एवं संकलन व्यास जी ने किया था जो सवर्ण नही थे। इतिहास मे ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिनसे साबित होता है कि जाति या वर्ण से नही, मेहनत, लगन से कोई भी इंसान प्रतिभाशाली हो सकता है। अपनी मेधा से कोई भी इंसान कुछ भी कर सकता है। इसलिए इन सब मिथकों, रूढियों से उपर उठकर वैज्ञानिक एवं शास्वत चिन्तन की ओर कदम बढाइये।

उत्तरः– आपने वर्ण व्यवस्था का बहुत अच्छा विस्तार से खाका खींचा है, किन्तु जाति व्यवस्था मेरे विचार मे कुछ भिन्न है। गुण कर्म स्वभाव के आधार पर वर्ण बनते थे, जातियॉ नही। प्रत्येक वर्ण के अंतर्गत कर्म भिन्नता के आधार पर जातियॉ बनती थी। जन्म से कोई व्यक्ति तब तक शूद्र होता था जब तक गुण और कर्म के आधार पर उसे द्विज की पहचान नही दी जाती थी। द्विज का अर्थ कभी ब्राम्हण नही होता था, बल्कि ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य जिन्हें अपने–अपने तरह के यज्ञोपवित मिल जाते थे वे सभी द्विज होते थे। ये यज्ञोपवित भी प्राचीन समय मे योग्यता के आधार पर मिलते थे, जो धीरे–धीरे जन्म के आधार पर रूढ होती चली गई। यह रूढिवाद किसी ने योजना पूर्वक किया नही बल्कि स्वतः होता चला गया, जिसने गुण और स्वभाव की पहचान को छोड दिया। ऐसे वर्णों के अंतर्गत कर्म के आधार पर पुनः विभाजन हुआ, जो जातियॉ बनी। आवश्यक है कि द्विवेदी, त्रिवेदी या चतुर्वेदी ब्राम्हण वर्ग के ही हो सकते थे और सुनार, लुहार वैश्य वर्ण के अंतर्गत ही। योग्यता के आधार पर बनने वाली अर्थ–व्यवस्था का रूढ हो जाना गलती थी, जिसका लाभ सवर्णों ने उठाना शुरू किया और यह लाभ आज भी सवर्ण उठा रहें हैं। धीरे–धीरे सवर्णो ने षडयंत्र पूर्वक इस वर्ण और जाति व्यवस्था को आरक्षण के रूप मे बदल दिया। यह अलग बात है कि वर्तमान बुद्धिजीवियों ने अपने को सवर्ण न कहकर बुद्धिजीवी कहना शुरू कर दिया और दो–चार प्रतिशत तथा कथित अवर्णों के साथ समझौता कर लिया। इन बुद्धिजीवियों ने जिनमे 95 प्रतिशत सवर्ण तथा पॉच प्रतिशत अवर्ण शामिल हैं। इन लोंगों ने शूद्र शब्द हटाकर श्रमजीवी शब्द बना दिया और अब ये बुद्धिजीवी श्रम शोषण के अपने षडयंत्र मे पूरी तरह सफल हो गयें हैं। आश्चर्य है कि मजदूरों मे भी षडयंत्र पूर्वक ये बुद्धिजीवी शिक्षित बेरोजगार बनकर श्रमजीवियों का सारा हिस्सा हडप लेंतें हैं। ये तथाकथित बेरोजगार संगठन बनाकर इस प्रकार की मॉग करतें हैं जो इन बुद्धिजीवियों को भी श्रमजीवी मान लें और उच्च पदों पर बैठे इनके सगे संबंधी बुद्धिजीवी इनकी मॉगों को स्वीकार कर लेंते हैं। अर्थात फिर से श्रमजीवियों के पक्ष मे एक लडाई लडनी पडेगी, जो बुद्धिजीवियों को ही आगे आकर लडनी होगी। देंखें कौन बुद्धिजीवी इस बात की पहल करता है।

सत्यपाल शर्माः नवी नगर बरेली उ.प्र.।

प्रश्नः–ज्ञानतत्व 279 मे आपने प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेंन्द्र मोदी को एक योग्य तथा अच्छा वक्ता बताया है किन्तु उन्हें अविश्वसनीय होना किस आधार पर बताया है यह नही पता। राहुल गॉधी को प्रधानमंत्री पद के लिए अक्षम किन्तु विश्वसनीय अपरिपक्व अनाडी बताया है। नरेंन्द्र मोदी ने गुजरात मे जन भावनाओं के अनुसार अच्छा कार्य किया तभी तो गुजरात मे तीसरी बार मुख्यमंत्री बने। उत्तरप्रदेश मे पूर्ण बहुमत मे अखिलेश यादव मुख्यमंत्री के पद पर आसीन हैं। उन्हें केवल वोट बैंक बढाने की चिंता हैं और वोट बैंक बढाने के लिए मुस्लिम तुष्टिकरण के साथ अनेक ऐसे फैसले लिए गये जिनके अमल पर हाईकोर्ट ने प्रतिबन्ध लगा

दिया। सत्तापक्ष को बडे विवेक दूरदर्शिता निष्पक्षता तथा न्याय को ध्यान मे रखते हुए निर्णय लेना चाहिए। कानून व्यवस्था, इंसाफ व हर नागरिक के जान–माल की रक्षा करना सरकार का सबसे महत्वपूर्ण नैतिक दायित्व है। देश मे पुलिस को राजनैतिक नियंत्रण से मुक्त करके कानून व्यवस्था व अपराध नियंत्रण के लिए उत्तरदायी बनाया जाए।

उत्तरः– क्षमता और योग्यता एक अलग गुण होता है और नीयत अलग। दोनो एक ही व्यक्ति मे आमतौर पर नही होता। बिरले लोगों मे ही दोनो गुण एक साथ होते हैं। जो लोग क्षमता और योग्यतावान होते हैं, वे आमतौर पर चालाक होतें हैं। उनकी चालाकी जल्दी समझ मे नही आती है। जब तक आम लोग उन्हें समझ पातें हैं, तब तक वे लोग बहुत आगे निकल जातें हैं। नरेंन्द्र मोदी चालाक हैं यह बात भी अब धीरे–धीरे प्रगट हो रही है और यह भी बात समझने वाले बहुत कम लोग ही हैं। वैसे तो लगभग एक वर्ष से जब से वे खुलकर मैदान मे आयें हैं तभी से संदेह होने लगा था। किन्तु जब से हरेन पण्डया की हत्या पर कुछ संदेह शुरू हुआ तब से कुछ अधिक संदेह होने लगा और वह संदेह तब विश्वास मे बदलने लगा जब उन्होंने एक लडकी की जासूसी करानी शुरू की । ऐसा कोई विश्वसनीय आधार नही है जिस आधार पर यह कहा जा सके कि उस लडकी के प्रति मोदी जी के मन मे किसी प्रकार के गलत भाव थे, किन्तु ऐसा भी आधार नही जब यह कहा जा सके कि मोदी जी के मन मे निश्चित रूप से ऐसे भाव नही थे। उनकी चालाकी की बातें तब और स्पष्ट हुई जब उन्होंने अपने पटना के भाषण मे जान–बूझकर असत्य का सहारा लिया।

जहॉ तक राहुल गॉधी का संबंध हैं तो राहुल गॉधी पूरी तरह शराफत की ओर बढतें दिखतें हैं। हो सकता है वह शराफत मूर्खता की सीमा तक जा रही हो किन्तु धूर्तता की ओर जा रही है ऐसा किसी प्रकार का संदेह नही है। राहुल गॉधी ने मुज्जफर नगर के कैंम्पों मे कुछ मुस्लिम षडयंत्रकारियों की होने की बात कही। वह बात पूरी तरह सच थी, किन्तु उनका सच राजनैतिक रूप से उत्तरप्रदेश मे हानिकर होने वाला था, फिर भी उन्होंने बिना सोचे–समझे यह बात कह दी। वैसे राहुल गॉधी की शराफत पर उसी समय विश्वास होने लगा था, जब उन्होंनें कहा कि मेरी विवाह करने की इच्छा नही है। अब तक राहुल गॉधी का एक भी ऐसा उदाहरण सामने नही आया है कि उन्होनें कहीं चालाकी का उपयोग किया हो। पिछले दिनो तो उन्होनें यहॉ तक कह दिया कि गॉव को अधिकाधिक अधिकार देने की जरूरत है। इसका अर्थ यह हुआ कि कोई भी अन्य राजनेता इस बात का ईमानदारी से समर्थन करके अपनी शक्ति को कमजोर नही करेगा, किन्तु उन्होनें इस बात को बार–बार दुहराया। जिस प्रकार राहुल गॉधी ने दागी सांसद बिल फाडकर फेंकनें की बात कही उसमें लाख खोजने के बाद भी कहीं कोई चालाकी का भाव नही दिखता। इन सब बातों को देखते–देखते मेरे मन मे यह विचार पक्का हुआ कि नरेंन्द्र मोदी एक सक्षम, योग्य, चालाक वक्ता तो हो सकतें हैं किन्तु विश्वसनीय नही है। दूसरी ओर राहुल गॉधी प्रधानमंत्री पद के लिए अक्षम, अपरिपक्व तथा अनाडी दिखतें हैं। किसी व्यक्ति का अनेक बार चुनाव जीतना आवश्यक नही कि सामान्य लोग उस व्यक्ति से धोखा न खा रहें हों। नरेंन्द्र मोदी की क्षमता बारह वर्ष पूर्व उस समय प्रमाणित हुई थी, जब उन्होंनें मुस्लिम सांम्प्रदायिकता को सफलता पूर्वक कुचलने का काम किया था। नरेंन्द्र मोदी उस समय अविश्वसनीय होने लगे जब उन्होंनें हिन्दू सांम्प्रदायिकता का पूरी तरह दामन थाम लिया। यदि अखिलेश यादव को मुस्लिम तुष्टिकरण के लिए दोष दिया जा सकता है तो हिन्दू तुष्टिकरण के नाम पर नरेंन्द्र मोदी का समर्थन करना आपकी निष्पक्षता पर संदेह पैदा करता है।

यू. एस. एम. पत्रिका गाजियाबाद उ.प्र.।

प्रश्नः–ज्ञानतत्व के माध्यम से आपके चिंतन पूर्ण आलेंखों को मै न केवल पढता हूॅ अपितु इन्हें समय–समय पर अपनी पत्रिकाओं मे प्रकाशित करके तथा पाठकों तक पहुंचाकर संवाद की प्रक्रिया को गतिमान बनाने का प्रयास करता हूॅ।

'ज्ञानतत्व' अंक 279, 16–30 नवम्बर 2013 मे राहुल गॉधी या नरेंन्द्र मोदी आलेख मे आपने इंदिरा गॉधी की हत्या और स्वर्ण मेदिर पर सैनिकों के हस्तक्षेप को मजबूरी मे होने वाला कार्य बताया है जबकि स्वर्ण मेदिर को वैसी स्थिति मे पहुचाने के लिए स्वयं इंदिरा जी ही उत्तरदायी थी जब उन्होंने पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री ज्ञानी जैल सिंह को कमजोर करने , तथा अकाली दल के प्रभाव

को कम करने के लिए भिंडरावाला रूपी ऑतकी को बढावा दिया जो बाद मे सिरदर्द साबित हुआ। आस्तीन मे सॉप पालनें वालों को यह कभी नही भूलना चाहिए कि अवसर आने पर वही सॉप अपने पालनकर्ता को भी डस लेता है।

उत्तरः– यह स्वाभाविक है कि कोई उच्च पद वाला व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत गलतियों का प्रभाव कम करने के कारण किसी खतरनाक व्यक्ति को प्रश्रय देता है जिसके परिणाम कालान्तर मे खराब होतें हैं। इंदिरा जी ने वैसी ही भूल पंजाब मे की थी तथा कालान्तर मे वैसी ही भूल राजीव गॉधी ने श्रीलंका मे की। व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए इस प्रकार की गई भूलें सीधे उस व्यक्ति के लिए कभी खतरा नही हुआ करती बल्कि ऐसी भूलें खतरनाक तब होती है जब ऐसी भूलों से पैदा खतरें उन उच्च पदासीन राजनेताओं की व्यक्तिगत सीमाओं से निकलकर देश या समाज के लिए खतरा बन जातें हैं । यह सही है कि भिंडरावाले को इंदिरा जी ने ही पाल–पोषकर अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए खडा किया था, किन्तु यह भी सही है कि संत भिंडरावाले अपनी सीमाओं से आगे बढकर देश के लिए खतरनाक होते जा रहे थे। इंदिरा जी ने भिंडरावाले को सीमा से बहुत अधिक तक बर्दाश्त किया किन्तु जब इंदिरा जी को अपने व्यक्तिगत स्वार्थ की अपेक्षा राष्टहित के विचार ने कुछ करने के लिए मजबूर कर दिया तब न चाहते हुए भी उन्होनें राष्टहित मे यह कदम उठाया। व्यक्तिगत और दायित्व के बीच सीधा–सीधा फर्क करना आसान काम नही होता। भिंडरावाले पर आक्रमण प्रधानमंत्री ने किया इंदिरा जी ने नही। यद्यपि दोनो जगहों पर इंदिरा गॉधी और प्रधानमंत्री एक ही व्यक्ति थे किन्तु इनकी अलग–अलग भूमिकाएं थीं। इस तरह यह स्पष्ट दिखता है कि भिंडरावाले को पैदा करना और खडा करना इंदिरा जी का व्यक्तिगत स्वार्थ था और भिंडरावाले को खतम करना एक राष्टीय मजबूरी थी और प्रधानमंत्री के रूप मे इंदिरा गॉधी का दायित्व भी। परिणाम भी आपके समक्ष है कि इंदिरा जी ने जो गलती की थी उसका परिणाम इंदिरा जी को व्यक्तिगत हत्या के रूप मे भुगतना पडा और इंदिरा जी ने राष्टहित मे जो कदम उठाया उसके लिए वे आज तक सारे देश मे सम्मान जनक मानी जाती है।

ओम प्रकाश आर्य : बिहारीपुर बरेली, उत्तरप्रदेश ।

प्रश्न– गत कुछ वर्षो से आपका श्रेष्ठ पाक्षिक पत्रिका ज्ञान तत्व कभी–कभी प्रायः दो या तीन माह के बाद निःशुल्क प्राप्त हो जाती है। अतः आपको कोटिशः धन्यवाद। बहुत दिनो से आपकी पत्रिका नही आई थी। आर्य समाज बिहारीपुर बरेली से पत्रिका संख्या 278 लेकर पढी। मुझे ऐसा लगा कि सम्भवतः आपने अपने आर्थिक विचार प्रथम बार सम्पूर्णता के साथ इतने सुविस्तृत और स्पष्ट रूप से इस पत्रिका के 30 पृष्ठों मे प्रकट किये।

यदि इन आर्थिक विचारो का इंग्लिस अनुवाद कराकर उसकी फोटो कापी प्रतियॅा सर्व श्री मनमोहन सिंह, श्री चिदम्बरम, नरेन्द्र मोदी, राजनाथ सिंह, लाल कृष्ण आडवाणी, मुलायम सिंह यादव, मायावती, सुब्रम्णयम स्वामी, रघुराम राजन और मोनटेंक सिंह अहलूवालिया को भेजने का कष्ट करें तो निश्चित ही इस भारत राष्ट्र के नीति निर्धारकों द्वारा राष्ट्रीय आर्थिक नीति मे सम्यक परिवर्तन करने से हमारे भारत पर आपका बडा उपकार होगा।

उत्तर– मैने ज्ञान तत्व 278 के माध्यम से नई अर्थनीति का जो विवरण भेजा वह आपको भी पसंद आया। इसके लिये आप धन्यवाद के पात्र हैं। किन्तु आपने जो सुझाव दिया वह इसलिये अनुपयुक्त है, क्योंकि ये सब लोग इन विषयों को अच्छी तरह समझते हैं किन्तु कुछ कारणो से ना समझ बने रहते है। सभी राजनैतिक दलो के सभी नेता अच्छी तरह जानते है कि श्रम जीवियों तथा बुद्धिजीवियो के बीच दूरी घटनी चाहिये। सभी नेता यह भी जानते है कि मंहगाई घट रही है तथा सभी यह भी जानते है कि कृत्रिम उर्जा की भारी मूल्य वृद्धि होनी चाहिये। किन्तु सभी राजनैतिक दलो के सभी नेताओ की यह मजबूरी है कि वे मध्यम श्रेणी की दया पर निर्भर है। यदि मध्यम श्रेणी के लोग नाराज हो जायेगें तो उन्हे बहुत बडी राजनैतिक हानि उठानी पडेगी। क्योंकि मध्यम श्रेणी के लोगो पर ही निम्न श्रेणी के वोट निर्भर करते है। स्पष्ट दिखता है कि भारतीय अर्थ व्यवस्था निम्न श्रेणी के शोषण तथा मध्यम श्रेणी के पोषक को आधार बनाकर चल रही हैं। अनजान लोगो को तो ज्ञान तत्व के माध्यम से जानकारी दी जा सकती है, किन्तु जो लोग सब कुछ जानते हुए भी राजनैतिक स्वार्थवश अनजान बने हुए है, उन्हे जानकारी देने का कोई लाभ नही ।

कश्मीरी विस्थापन –समस्या और समाधान

रमेश कुमार चौबे, राष्ट्रीय महासचिव– लोक स्वराज मंच। मोबाइल न0–8435023029 ।

प्रश्नः– राजनीतिक लोग कश्मीरी हिन्दुओं के विस्थापन के लिये मात्र कश्मीरी मुसलमानो को दोष देते है जो सरासर अन्याय है। चरम पंथियों के बजाय आम कश्मीरी मुसलमानो की निंदा करके हम जान बुझकर जहर भरते है उनके भीतर अपने और अपने देश के लिये। सरकार और कुछ स्वार्थी लोग जिन्हे चिताओ मे रोटियां सेक कर कब्रो मे दावत उडाने की लत पड चुकी है, उन्होने जहर के बीज बोने मे रात दिन बराबर कर रखा है। हमारे विचार से मूल कश्मीरियों (मुसलमानों) को दोष देना सर्वथा अनुचित है।

यह भी सही है कि आतंकवाद ग्रस्त कश्मीर मे कई अजीब दास्ताने है। इनमे सबसे अहम और चौंकाने वाली बात उन हिन्दू विस्थापितों की है जिन्होने पेट की आग बुझाने और घर मे चूल्हे जलता रहे इसके लिये अपने बच्चों को या तो गिरवी रख दिया या फिर बेच डाला था। जबकि दूसरी ओर बिडम्बना यह है कि सरकार अलगाव वादी नेताओ की सुरक्षा तथा जेलो मे बंद आतंकवादियों के राशन पर करोडो रूपये खर्च कर रही है। आधिकारिक तौर पर स्वीकार किया गया है कि कश्मीरी अलगाववादी नेताओ को दी जाने वाली सुरक्षा पर प्रतिवर्ष डेढ करोड खर्च हो रहा है। इसमे उन सुरक्षा कर्मियों के वेतन शामिल नही किया गया है, जो उनकी सुरक्षा मे तैनात किये गये है। रोचक और चौंकाने वाला तथ्य यह है कि ऐसे पचास के करीब कश्मीरी अलगाव वादी नेता है जिन्हें राज्य सरकार ने केन्द्रीय सरकार के आदेश पर सरकारी सुरक्षा मुहैया करवा रखी है। वे भारतीय सरकार की सुरक्षा के बीच रहते हुए भी भारत के विरूद्ध दुष्प्रचार से बाज नही आते।

राष्ट्रीय विचार मंच के श्री जगदीश्वर चतुर्वेदी जी का लेख **सभ्यता का अंत है–कश्मीरी पंडितो का विस्थापन** पूरी स्थिति स्पष्ट करने के लिये पर्याप्त है–कश्मीरी पंडितो का वैभव और सांस्कृतिक सम्पन्नता का इतिहास रहा है। भारत की श्रेष्ठतम बौद्धिक परंपराओ को कश्मीरी पंडितो ने पैदा किया। भारत का मान सम्मान सारी दुनिया मे उॅचा किया। कश्मीरी पंडित मधुर भाषी, ज्ञानी लोग रहे है। कश्मीरी पंडितो का समूचा समुदाय सांम्प्रदायिक सहिष्णुता का आदर्श रहा है और आज भी है। ज्ञान, शान्ति और सभ्यता का विकास ये तीन इनके सामूदायिक लक्ष्य रहें है। ये लोग हिंसा से कोसो दूर हैं। कश्मीरी पंडित कश्मीरियत की पहचान के आदर्श मानक भी है। उनका विस्थापन कश्मीरियत का अंत है। कश्मीरी पंडितो ने कभी किसी पर हमला नही किया। वे कभी सांम्प्रदायिक नही बने। सभ्य और नरम स्वभाव के कारण उन्हे निशाना बनाया गया।

कश्मीर मे मुस्लिम सांम्प्रदायिकता का लंबे समय से गहरा असर रहा है, और समय–समय पर स्थानीय राजनैतिक पार्टियॉ मुस्लिम साम्प्रदायिकता के सामने समर्पण और समझौते करती रही है। इसके जबाब मे हिन्दू सांम्प्रदायिकता भी प्रतिकार स्वरूप हिन्दुओ को एकजुट करती रही है। वर्तमान मे कश्मीरी पंडित शरणार्थी है और अपनी जमीन जायदाद और मातृभूमि से बेदखल होकर दिल्ली और जम्मू मे बदहाल, अशांत और संस्कृति विहीन जिंदगी जी रहे है। भारत सरकार शरणार्थी कश्मीरी पंडितो के पुनर्वास, घर वापसी और सुरक्षा को अभी तक सुनिश्चित नही कर पायी हैं। कश्मीरी पंडित दोबारा क्यो नही बस पाये? इन सवालो का कोई संतोषजनक उत्तर नही मिलता। सरसरी तौर पर इसका प्रधान कारण है कश्मीर प्रशासन का साम्प्रदायिक चरित्र और केन्द्र सरकार का सांम्प्रदायिकता के प्रति नरम रूख। कश्मीर प्रशासन का सांम्प्रदायिक चरित्र विगत 50 सालो मे बना है उनमे नेशनल कांफ्रेस और कांग्रेस की मिली भगत रही है। दोनो पार्टियॉं मुस्लिम सांम्प्रदायिक ताकतो से बढत हासिल करने के लिए अनेक ऐसे कदम उठा चुकी है जिससे साम्प्रदायिक भेदभाव बढा।

मुस्लिम साम्प्रदायिकता को जनता से काटने के चक्कर मे ये दोनो दल जनता से कटते चले गये। आज हालात यह है कि कश्मीर मे सेना न भेजी जाये तो कांग्रेस और नेशनल कांफ्रेंस का एक भी कार्यकर्ता वहां जिंदा न बचें। कई लाख सैन्य और अर्द्धसैन्य बलो के भरोसे भारत का झंडा कश्मीर मे फहरा रहा है।

उल्लेखनिय बात यह है कि–जिस समय कश्मीरी पंडित शरणार्थी बनाये जा रहे थे, संघ परिवार राम मंदिर आंदोलन के नाम पर सारे देश मे मुसलमानो के खिलाफ घृणा फैलाने का काम कर रहा था। देश के विभिन्न इलाको मे साम्प्रदायिक संगठन मुसलमानो को सबक सिखाने, दंगा और हत्या करने का काम कर रहे थे। दूसरी ओर कश्मीर मे मुस्लिम फंडामेंटल साम्प्रदायिक संगठनो के द्वारा कश्मीरी पंडितो का सुंनियोजित कत्लेआम किया जा रहा था। यहां यह कहना मुश्किल है कि कौन किससे प्रेरणा ले रहा था।

कश्मीर पंडितो की शरणार्थी समस्या राष्ट्रीय समस्या है। यह भारत के धर्मनिरपेक्षता पर लगा बदनुमा दाग है। यह दाग जितना जल्दी मिटे भारत का उतनी ही जल्दी मंगल होगा। कश्मीरी पंडितो की घर वापसी सभ्यता की वापसी कहलाएगीं, यह काम हमे सर्वोच्च प्राथमिकता देकर करना चाहिये।

सत्ता मे पांच वर्ष पूरे करने वाली गठबंधन सरकार कश्मीरी पंडितो की वापसी कराने मे नाकाम रही। मुख्य मंत्री ने विस्थापित कश्मीरी पंडितो को विश्वास दिलाया है कि कश्मीर उनके बिना अधूरा है। उनकी सम्मानजनक वापसी होगी। कश्मीरी पंडितो के लिये बेहतर आर्थिक और रोजगार पैकेज हासिल करने का मुददा केन्द्र सरकार के समक्ष उठायेगें। प्रश्न यह है कि कब तक झूठे आश्वासन दिये जाते रहेंगें? इन विस्थापित हुए कश्मीरी पंडितो के साथ राजनीतिक पार्टीयॉ एक तरह से झूठी तुष्टीकरण की नीति अपना रही है। दोहरा मानदंड आखिर क्यो ?

उत्तर प्रदेश के मुज्जफ्फर नगर मे बस थोडे ही मुस्लिम विस्थापित हुये है। अभी वक्त भी अधिक नही हुआ लेकिन मुस्लिम तुष्टिकरण के नाम पर हाय तौबा मचा हुआ है जबकि उनसे कहीं ज्यादा नारकीय स्थिति कश्मीरी विस्थापित पंडितो की बनी हुई है। और पूरा का पूरा देश आखिर मौन क्यों है? समाज को आगे आना पडेगा। तभी ऐसी वीभत्स्य समस्या का सार्थक समाधान निकलेगा।

उत्तर– इस संबंध मे एक विस्तृत लेख ज्ञान तत्व के इसी अंक मे जा रहा है आप उस लेख को पढकर यदि समीक्षा करेंगे तो और अच्छा हेागा।

अपनो से अपनी बात–

1. श्री मति कमलेश शर्मा : विजनौर उ0प्र0

प्रश्न– हमको ज्ञान तत्व पाक्षिक कभी मिल जाता है कभी नही भी मिलता है। ज्ञान तत्व भेजने के लिये धन्यवाद।

2. प्रो0 भाग सिंह आर्य : कैथल हरियाणा।

प्रश्नः– आप द्वारा लिखित ज्ञानवर्धक व प्रगतिशिल विचार, ज्ञानतत्व पाक्षिक के माध्यम से पढने को मिलते रहते हैं इसलिये धन्यवाद। लेकिन पत्रिका नियमित नही मिलती।

उत्तर– ज्ञान तत्व आपको कभी–कभी मिलता है यह सच है। हमारे कार्यालय के द्वारा मुझे बताया गया कि ज्ञान तत्व के पाठकों को इस बात के लिये चिट्ठी भेजी गई थी कि ज्ञान तत्व आपको मिलता है कि नही? काम आता है या नही ? यह चिट्ठी सिर्फ उन्हीं पाठको को भेजी गई थी जो दिसम्बर 2012 तक हमारे पाठक थे। उसके बाद के पाठको को चिट्ठी नही गई है। तीन–तीन पोस्टकार्ड भेजे जाने के बाद भी जिनका कोई उत्तर नही आया, उनके विषय मे हमारी यह धारणा बनी कि या तो वे पाठक जीवित नही है अथवा उन्होने मकान बदल लिया है अथवा वे कभी न स्वयं देखते है न दूसरों को देते है। ऐसे उत्तर न प्राप्त करने वालो के ज्ञानतत्व भेजने मे जून माह से 25 प्रतिशत कटौती की गईं। अक्टूबर माह से 50 प्रतिशत कटौती की गई। दिसम्बर माह से 75

प्रतिशत कटौती की गई और फरवरी माह से शत–प्रतिशत कटौती कर दी जायगी। तब तक जब तक आपका कोई उत्तर नही आता। आप फोन करके भी सूचना दे सकते है। पत्र द्वारा भी सूचना दे सकते है।

ज्ञान तत्व पाक्षिक निःशुल्क नही है। लेकिन ज्ञान तत्व सशुल्क भी नही है। पाठक अपनी क्षमतानुसार सहायता के रूप मे जो चाहे भेज सकते है। वैसे हमे प्रति ज्ञान तत्व वार्षिक सौ रूपया का खर्च आता है। आप 10 रू भी भेज सकते है। सौ रूपये भी भेज सकते हैं, हजार रूपया भी भेज सकते है और दस हजार रूपया भी भेज सकते है। आप चाहें तो नही भी भेज सकते है। अगर आप ज्ञान तत्व पाक्षिक पत्रिका की सहायता राशि जमा करना चाहते है तो आप बजरंग लाल अग्रवाल , एस बी आई 11374646729 रामानुजगंज जिला–बलरामपुर रामानुजगंज छत्तीसगढ मे आप पैसा जमा करा सकते है। आप मनिआर्डर भेज सकते हैं अथवा आप बजरंग अग्रवाल अथवा बजंरंग मुनि, बनारस चौक, अम्बिकापुर सरगुजा छत्तीसगड के लिए चेक के द्वारा भी पैसा जमा करा सकते है।

यदि आप आधुनिक सांधनो का उपयोग करते हो तो आप इंटरनेंट पर kaashindia.com काश इंडिया डाट काम की वेबसाइट खोलकर उस वेबसाइट के मैगजीन भाग मे जाकर नवीनतम व पुराने ज्ञान तत्व के अंक पढ सकते हैं। इससे आपको यह सुविधा होगी कि छपाई और डाक के विलंब की अपेक्षा आप हर महीने की पांच और बीस तारीख के करीब ज्ञान तत्व पढ सकते है। जो पोस्ट से जाते जाते करीब 25 दिन लग जाते है। आप ज्ञान तत्व पढकर उन विचारो पर टिप्पणी भी कर सकते है। और वह टिप्पणी bajrang.muni@gmail.com पर ई–मेल कर सकते है या पत्र लिख सकतें है।

हम आपसे एक और अपेक्षा करते हैं कि आप कुछ नये नाम और पते इस प्रकार भेजे जिससे एक जिले मे कम से कम 100 पाठको की संख्या बन सके। आप नये नामो की सूची पत्र द्वारा भी भेंज सकते है या ई–मेल भी कर सकते है। यदि आप ज्ञान तत्व मे उठाये गये विषयो को टी वी के माध्यम से देखना चाहते है तो रिलांयस कंपनी की छतरी के 425 नम्बर के चैनल ए टू जेड न्यूज चैनल पर आयोजित समाधान विषय पर प्रत्येक महीने चार दिन खुली बहस मे देख सकते है। यह बहस प्रत्येक माह के प्रत्येक रविवार और प्रत्येक सोमवार को रात आठ से नौ बजे तक प्रसारित होती है। महीने मे चार अलग–अलग विषयों पर यह बहस प्रसारित होती है और यही बहस उसी समय पर इन्ही दिनो मे एक–एक बार पुनः प्रसारित होती है। इस तरह आप प्रति माह 8 बार रविवार और सोमवार की रात आठ से नौ बजे तक समाधान कार्यक्रम के अंतर्गत यह बहस सुन सकते है। यह बहस लाइव प्रसारित नही होती है, बल्कि कुछ दिनो पूर्व रिकार्ड कि जाती है, जो उस समय प्रसारित होती है। इसी टी वी चेनल पर शुक्रवार की शाम 4:30 बजे से 5:00 बजे तक तथा शनिवार की रात 8 से 8:30 बजे तक ऐसा देश हो मेरा कार्यक्रम के अंतर्गत मुझे अर्थात बजरंग मुनि से एंकर की सीधी बातचीत प्रसारित होती है। यह बातचीत भी अलग–अलग विषयो पर हर महीने मे चार बार प्रसारित हेाती है। जो चार बार पुन प्रसारित होती है। इस तरह ऐसा देश हो मेरा तथा समाधान कार्यक्रम को मिलाकर प्रति माह 8 अलग अलग विषयो पर तथा 8 उन्ही के पुनः प्रसारण मिलाकर 16 दिनो तक आप मुनि जी के विचारो को सुन सकते है।

ज्ञान तत्व पाक्षिक न तो कोई साहित्यिक पत्रिका है न ही धार्मिक। ज्ञान तत्व मे स्थापित तथा निर्विवाद सत्य का प्रचार–प्रसार भी नही होता ना ही महापुरूषो के विचार प्रसारित होते है। ज्ञान तत्व मे विवादित विषयो पर समीक्षा ही प्रकाशित होती है। अनेक पाठको को ऐसा लगता है कि उन्होने बहुत अच्छा लेख भेजा था किन्तु वह नही छपा । यह बात सच भी है क्योकि उनके लेख का कोई भी अंश विवादित नही पाया गया इसलिये उसे ज्ञान तत्व मे स्थान नही मिला। अनेक पाठको को ऐसा लगता है कि वे जो भी लिखते है मुनि जी किसी ना किसी तरह उसके विरूद्ध लिख देते है। यह बात सही भी है क्योकि आपके कथन के विरूद्ध यदि कुछ प्रश्न उठाने की गुंजांइस नही होगी तो आपके पत्र को ज्ञान तत्व मे स्थान नही मिल पाएगा। हमारा उदेश्य विचार मंथन है विचार प्रसार नहीं। हम उस पाठक को ज्ञान तत्व मे सबसे ज्यादा स्थान देते है, जो मेरे विचारो पर प्रश्न उठाते हैं और प्रश्नो के उत्तरो पर भी प्रति प्रश्न करते हे। सुनिल तामगाडगे के विचारो तथा आचार्य पंकज जी के उत्तर इसके उदाहरण हैं। अतः मैं चाहता हूॅ कि आप खोज–खोज कर प्रश्न करें। मै जानता हूॅ कि जगदीश गांधी लखनउ उत्तर प्रदेश के शिक्षण संस्थान

से जुडे है, बहुत अच्छे विद्वान हैं, हमेशा बहुत अच्छे सुलझे हुए विचार भेंजते है किन्तु जब तक मुझे उनके विचारो मे कोई विरोधाभाष नही दिखता तब तक मै उनके विचारो को प्रकाशित नही कर पाता। मेरा निवेदन है कि मेरी मजबूरी को भी पाठक समझेगें। मै हमेशा चाहता हूॅ कि जो लोग आर्थिक दृष्टि से सक्षम है वे आर्थिक सहायता देकर, जो विचार मंथन मे भाग ले सकते हैं वे प्रश्नोत्तर मे भाग लेकर और वे जो सिर्फ सहानुभूति रखते है, वे नये नाम भेजकर सहायता कर सकते है। ज्ञान तत्व सब प्रकार की सहायता की अपेक्षा रखता है।

खबरें इस पखवाडे की

जब से विधानसभा चुनाव के चार राज्यों के चुनाव परिणाम आयें हैं, तभी से कॉग्रेंस सरकार ने अपनी रणनीति पूरी तरह बदल ली है। कॉग्रेंस को यह समझ मे आ गया है कि अगली सरकार उनकी नही बनने वाली है। इसलिए कॉग्रेंस लोकहित के कार्यों को करना छोडकर लोकप्रिय कार्यों को करने की ओर मुड गई है। कॉग्रेंस पार्टी और सरकार दोनो ही यह समझतें हैं कि खर्च बढाना और आय घटाना एक लोकप्रिय कदम होता है। भले ही इससे अर्थ व्यवस्था पर दूरगामी दुष्परिणाम होतें हैं। चूॅकि लोकसभा चुनाव तीन महीने मे ही हाने वालें हैं, इसलिए सरकार गैस सिलेंन्डरों की संख्या बढाने अथवा डीजल के दाम घटाने जैसे लोकप्रिय कदम उठाने की सोच रही है। ऐसे लोकप्रिय कदम अगले एक महीने मे और भी उठाये जा सकतें है। सरकार यह भी जानती है कि भारत मे भी अमेरिका के विरूद्ध जनमत प्रबल है। अमेरिका से टकराव लेना पूरी तरह देश–हित के विरूद्ध है फिर भी भारत सरकार ने देवयानी खोबरागडे जैसे मामूली मुददे को इतना अधिक तूल दिया। इससे यह स्पष्ट है कि सरकार लोंगों की भावनाओं को शॉत भी करना चाहती है तथा आगे आने वाली सरकारों की राह मे कॉटें भी बिछाना चाहती है। अमेरिका सहित सारी दुनिया आश्चर्य चकित है कि भारत सरकार को एका–एक यह क्या हो गया है? मुझे तो लगता है कि यदि चार राज्यों के चुनाव आठ महीने पहले हो गये होते तो भारत सरकार पाकिस्तान से भी उलझ सकती थी। आगे देखिए कि राजनीति के दॉव–पेंच मे अगले तीन महीने किस तरह बीततें हैं। देवयानी प्रकरण से भाजपा सहित अन्य दलों के हाथ का मुद्दा छीन गया और उनकी बोलती बन्द हो गई है, उनकी गति सॉप–छछूॅन्दर की हो गई है।